गौशालक ने वैश्यायन तपस्वी को बार-बार चिढ़ाया तो उसने क्रुद्ध होकर उस पर तेजोलेश्या छोड़ दी। गौशालक : प्रभु, बचाओ-बचाओ, कहता हुआ भागा, उसने प्रभु की चरण-शरण ले ली। तपस्वी ने प्रभु, जान लिया, कहकर क्षमा मांगी।

विवरण पेज नं-86 पर

चित्र नं-18

संगम ने एक ही रात में प्रतिकूल-अनुकूल बीस प्रकार के मारणान्तिक कष्ट दिए।

विवरण 89 पृष्ठ पर

चमरेन्द्र ने प्रभु की शरण लेकर सौधर्मेन्द्र को जाकर ललकारा। सौधर्मेन्द्र ने उस पर वज्र फेंका। फिर ज्ञान से देखा कि वह तो प्रभु महावीर की शरण लेकर आया है तो वज्र रोकने के लिए दौड़ा। चमरेन्द्र भागकर प्रभु के चरणों में आकर छुप गया।

विवरण 107पेज पर

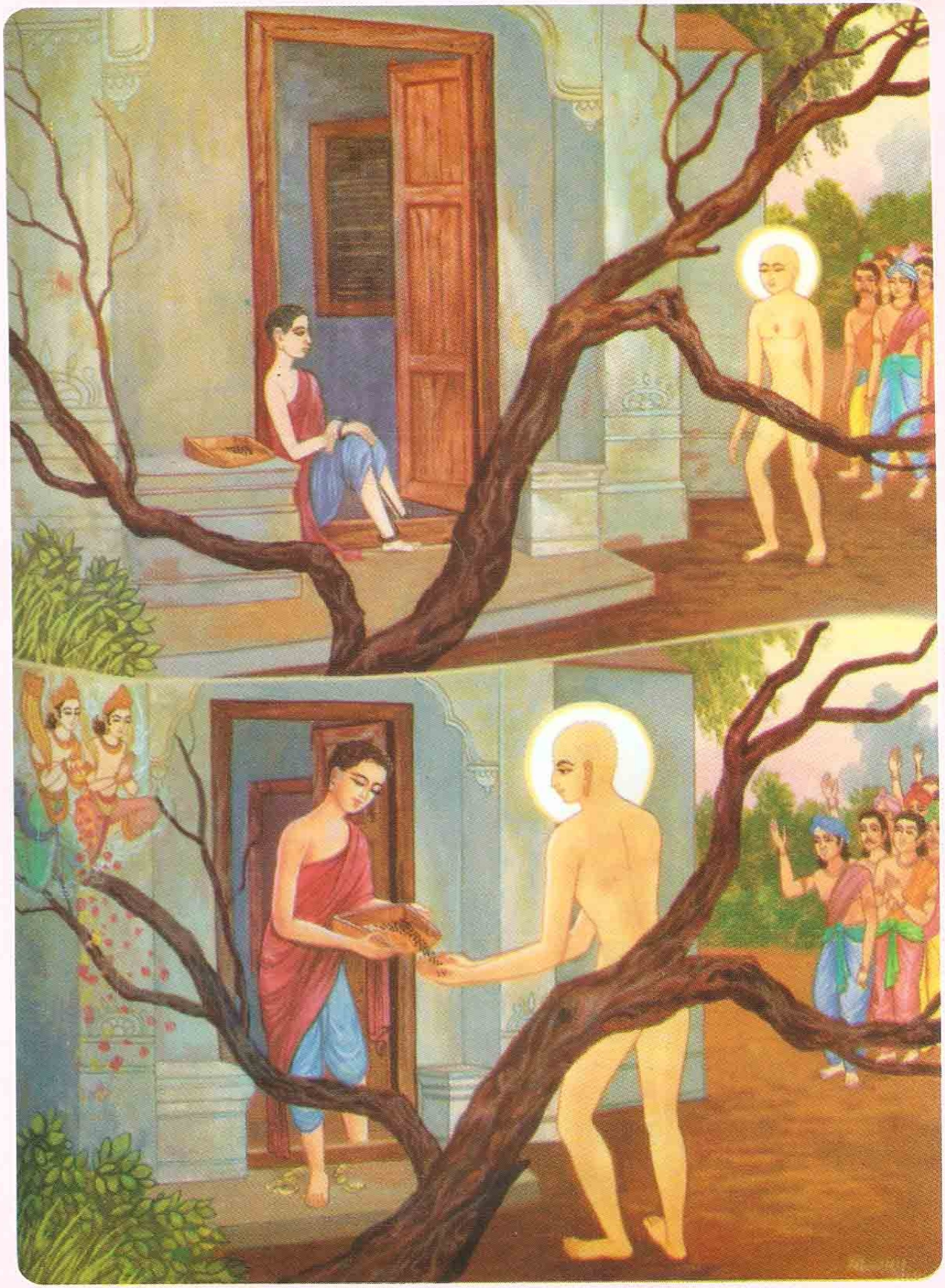

चंदना द्वार पर बैठी है। प्रभु छह मासी अभिग्रह की पूर्ति के लिए भिक्षा लेने उसी की तरफ आ रहे हैं। प्रभु को द्वार पर पधारा देखकर हर्ष विभोर चंदना ने उड़द के बाकलों का दान दिया। घोर अभिग्रह पूर्ण हुआ।

विवरण 98 पेज पर